

लिंग लाई ( १८४ )

तीज हरियाली आई आई  
साई झूले वाधाई गाई॥

हीउ झूलो आ भागनि भरियो जंहि ते साई अ आ चरणु  
धरियो  
हीअ शोभा आ मन खे भाई भाई ॥

रिमि झिमि थो बादल बरसे जंहि जी गोदीअ में दामिनि हंसे  
थी धरती आ साई साई॥

पीया पीया पपीहा बोले झूला साई का धीरे डोले  
छटा सुन्दर आ छाई छाई॥

बृज वन में झूले जी बहार गोदि साई अ जी युगल सरकार  
सची लिंग लाल लाई लाई॥

सुखवास चमन सुखधामा जिते विहरन था सीय रामा  
निधि कोकिलि है पाई पाई॥